प्राथमिक शिक्षा में इतिहास का ध्येय

जॉन ड्युई

अगर हम इतिहास को केवल अतीत के ब्यौरे के तौर पर देखें, तो यह दावा करना काफ़ी मुश्किल होगा कि इतिहास को प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में किसी भी प्रकार की बड़ी भूमिका निभानी चाहिए। जो बीत गया सो बीत गया और अतीत के मुर्दे दफ़नाने में ही भलाई है। वर्तमान में कई सारे अत्यावश्यक मुद्दे हैं, भविष्य की दहलीज़ पर बहुत-सी बातें पुकार रही हैं, जो बच्चों को हमेशा के लिए बीत चुकी बातों का अध्ययन करने की अनुमति देने से हमें रोकती हैं। लेकिन जब हम इतिहास को सामाजिक जीवन की शक्तियों और रूपों की दृष्टि से देखते हैं तो बात बदल जाती है। सामाजिक जीवन हमेशा हमारे साथ रहता है; अतीत और वर्तमान के अन्तर से सामाजिक जीवन तटस्थ है। चाहे जीवन इस काल में बीता है या उस काल में बीता था, यह सिर्फ़ कुछ क्षणों का मामला है। जीवन इस सब के लिए है; यह उन उद्देश्यों को दर्शाता है जो मनुष्यों को साथ लाते हैं और उन्हें अलग-थलग कर देते हैं और दर्शाते हैं कि क्या वाँछनीय है और क्या दुख देता है। इतिहास एक समाजविज्ञानी या इतिहासकार के लिए भले कुछ भी हो, पर एक शिक्षक के लिए तो यह अप्रत्यक्ष समाज विज्ञान ही होता है – यानी समाज का अध्ययन – जो ख़ुद के बनने और संगठित होने के तरीक़ों और प्रक्रियाओं को उजागर करता है। मौजूदा समाज बच्चों के अध्ययन के लिए बहुत जटिल तो है ही, साथ ही यह समाज बच्चों के बहुत क़रीब का है या कहें जाना-पहचाना है। बच्चे के लिए इसकी बारीक़ियों की भूलभुलैया में चलने के कोई सुराग़ नहीं होते और ना ही वह दृष्टि की ऐसी ऊँचाई पा सकता है जिससे वह इसकी बनावट को देख सके।

अगर इतिहास शिक्षण का ध्येय यह हो कि बच्चे सामाजिक जीवन के मूल्यों को सराह सकें, वे उन शक्तियों की कल्पना कर सकें जो मनुष्य को एक-दूसरे का प्रभावी सहयोग करने देती हैं, वे उस प्रकार के चरित्रों से वाक़िफ़ हों जो मदद करते हैं या वे जो बाधा बनते हैं, तो उसके प्रस्तुतीकरण में यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह चलायमान एवं गतिशील हो। इतिहास का प्रस्तुतीकरण केवल परिणामों और प्रभावों के संचय की तरह नहीं, क्या हुआ था उसके महज एक बयान की तरह नहीं, बल्कि एक सशक्त, क्रियाशील चीज़ की तरह होना चाहिए। इरादे या मंशा – यानी जो इंजन की तरह काम करते हैं – उनका उजागर होना ज़रूरी है। इतिहास के अध्ययन का मतलब केवल जानकारी बटोरना नहीं होता, बल्कि उस जानकारी का प्रयोग करके एक

जीवन्त तस्वीर का निर्माण करना भी होता है जो यह दिखाए कि मानव ने जो किया वह कैसे और क्यों किया; और कैसे और क्यों सफलता या असफलता प्राप्त की।

जब इतिहास की अवधारणा एक चलती हुई एवं गतिशील चीज़ की तरह की जाती है, तो इसके आर्थिक और उद्योगिक पहलू प्रमुख बन जाते हैं। ये केवल चन्द तकनीकी शब्द हैं जो उन समस्याओं को अभिव्यक्त करते हैं जिनसे मानवता निरन्तर जूझती रहती है; कैसे जिया जाए, प्रकृति को कैसे अपने क़ाबू में करके उसका उपयोग मानव जीवन में समृद्धि लाने के लिए किया जाए। मानव सभ्यता के विकास की ओर लिए गए बड़े क़दम मानव की बुद्धिमत्ता के उन प्रदर्शनों द्वारा सम्भव हुए हैं जिन्होंने मानव को प्रकृति के पराधीन एक नाज़ुक जीव से उठाकर अपने इरादों को मुक़ाम तक पहुँचाने में प्रकृति की शक्तियों से सहयोग पाने के तरीक़ों से अवगत कराया। बच्चा आज जिस सामाजिक दुनिया में रहता है वह इतनी परिपूर्ण और समृद्ध है कि यह देखना कठिन हो जाता है कि इसकी क्या क़ीमत चुकाई गई है, इसके पीछे कितना विचार और प्रयास है। मनुष्य के पास एक ज़बरदस्त उपकरण मौजूद है। बच्चों को इन तैयार संसाधनों को तरल रूप में देखने की ओर ले जाया जा सकता है; उसे विरासत में मिली पूँजी और किसी उपकरण या निर्मित सामग्री के बग़ैर मनुष्य का प्रकृति के साथ आमना-सामना देखने की ओर ले जाया जा सकता है। और धीरे-धीरे वह उन प्रक्रियाओं का अनुसरण कर सकेगा, जिनसे मानव ने अपनी परिस्थितियों की ज़रूरतों को पहचाना, हथियार और औज़ारों की कल्पना की और बनाए ताकि वह उन स्थितियों से जूझ सके। इस तरह बच्चा यह सीख सकेगा कि इन संसाधनों ने कैसे विकास के नए क्षितिजों के लिए रास्ता बनाया और कैसे नई समस्याओं को उत्पन्न किया। मानव का उद्योगिक इतिहास केवल भौतिकवादिता और उपयोगवादिता का मसला नहीं है। यह मसला है बुद्धिमत्ता का। यह जीवन इतिहास दर्शाता है कि कैसे मनुष्य ने सोचना सीखा और सोचने की क्षमता से ज़िन्दगी की परिस्थितियों को कैसे कुछ इस प्रकार बदला कि ज़िन्दगी ही बदल गई। यह एक नैतिक अभिलेख भी है; उन परिस्थितियों का वर्णन है जिन्हें मनुष्यों ने धैर्यपूर्वक गढ़ा, अपने इरादों को मुक़ाम तक पहुँचाने के लिए।

इन्सान जीवन कैसे जीते हैं – बेशक, यही वह सवाल है जो ऐतिहासिक सामग्री के प्रति बच्चों की मुख्य रुचि को दर्शाता है। यही वह नज़रिया है जो अतीत में काम करने वालों को उसके दैनिक जीवन से वास्ता रखने वालों के क़रीब लाता है। यही उसे सहानुभूतिपूर्ण पैठ बना पाने का उपहार देता है।

वह बच्चा जो यह जानने में रुचि रखता है कि मानव कैसे अपना जीवन जीते थे, कौन-से औज़ारों से काम करते थे, कौन-से नए आविष्कार करते थे और इस तरह से पाए गए आराम व

ताक़त से उनकी ज़िन्दगी में क्या बदलाव आए, वह इन प्रक्रियाओं को अपने कार्यों में दोहराने की तीव्र इच्छा रखता है, जैसे बर्तनों का पुनःनिर्माण, चीज़ें बनाने की प्रक्रियाओं को दोहराना और सामग्रियों के साथ हाथ से काम करना। चूँकि वह उनकी परेशानियाँ केवल तभी समझ सकता है जब वह यह देख सके कि उनके सामने कौन-सी प्रकृतिदत्त बाधाएँ और उन बाधाओं से निपटने के लिए प्रकृति से मिले संसाधन उपलब्ध हैं, इसीलिए वह बच्चा जंगल, मैदान, समुद्र, पहाड़, पेड़-पौधे और पशु-पक्षियों में रुचि रखता है। उस प्राकृतिक वातावरण की एक अवधारणा बनाकर जिसमें उसके अध्ययन वाले लोग जिया करते थे, वह उनके जीवन पर पकड़ बना पाता है। वह यह तब तक नहीं दोहरा सकता जब तक वह अपने परिवेश की प्राकृतिक शक्तियों एवं रूपों से परिचय नहीं कर लेता। प्रकृति के उसके अध्ययन को इतिहास में उसकी रुचि एक ज़्यादा मानवीय रंगत, एक व्यापक अभिप्राय देती है। प्रकृति का ज्ञान उसके इतिहास के अध्ययन में उसकी अर्थपूर्णता और सटीकता को बढ़ाती है। यही इतिहास और विज्ञान के बीच का प्राकृतिक "पारस्परिक सम्बन्ध" (correlation) है।

इसी तरह से, सामाजिक जीवन की गहराती हुई समझ इतिहास के अध्ययन में जीवनी तत्व का स्थान तय करती है। यह ऐतिहासिक सामग्री व्यक्तिगत रूप में प्रस्तुत किए जाने पर पूरी तरह से और सजीव ढंग से बच्चों को अपील करती है; जब कुछ वीर चरित्रों के जीवन और कार्यों के रूप में यह अभिव्यक्त किया जाता है, तब तो निस्सन्देह। मगर जीवनियों को कुछ इस प्रकार से भी प्रयोग में लाना सम्भव है कि वे महज कहानियों के संग्रह के रूप में रह जाती हैं, दिलचस्प कहानियाँ, सम्भवतः, इतनी दिलचस्प कि सनसनीखेज कहला सकें, अपितु बच्चे को सामाजिक जीवन को समझने के क़रीब नहीं ला पाएँ। यह तब होता है जब कहानी के मुख्य क़िरदार को हम उसके सामाजिक जीवन से पृथक कर देते हैं; जब बच्चा यह महसूस नहीं कर पाता कि कौन-सी सामाजिक परिस्थितियों ने उस पात्र को वो कार्य करने पर मजबूर किया और उसके कार्यों से कौन-से सामाजिक बदलाव आए। अगर जीवनी का प्रस्तुतीकरण सामाजिक ज़रूरतों और उपलब्धियों को दर्शाने वाले एक नाटकीय सारांश के तौर पर हो, अगर बच्चे की कल्पना उन सामाजिक विकारों और समस्याओं को देख पाती हो जिन्होंने मनुष्य को घेर रखा था और उस आपातकाल से निपटने में मनुष्य ने किन तरीक़ों का उपयोग किया था, तब हम कह सकते हैं कि वह जीवनी सामाजिक अध्ययन का एक साधन है।

इतिहास के सामाजिक ध्येय की चेतना, उसे मिथक, क़िस्से-कहानियाँ और साहित्यिक प्रस्तुतियाँ बनने से बचा लेता है। मैं इस ख़्याल को टाल नहीं पाता हूँ कि हालाँकि हरबारटियन (Herbartian) विचारधारा ने इतिहास के प्राथमिक पाठ्यक्रम को समृद्ध बनाने के काफ़ी प्रयास किए हैं, परन्तु अक्सर इसने इतिहास और साहित्य के वास्तविक सम्बन्ध को उलट दिया है।

एक हद तक अमरीकी औपनिवेशिक इतिहास का मूल भाव और डी फोह (De Foe) द्वारा लिखित *रॉबिंसन क्रूसो* (*Robinson Crusoe*) एक समान है। दोनों ऐसे मनुष्य को दर्शाते हैं जो एक सभ्य समाज में रहता है, जिसने विचारों की एक निश्चित परिपक्वता प्राप्त कर ली है, जिसने आदर्शों और उसकी क्रिया के साधनों को विकसित कर लिया है, लेकिन फिर अचानक उसे ख़ुद के संसाधनों पर छोड़ दिया जाता है, जंगली एवं प्रतिकूल क़ुदरत से जूझने के लिए, जहाँ वह सफलता को पुनः हासिल करता है केवल अपनी बुद्धिमत्ता, ऊर्जा और चरित्र की दृढ़ता के माध्यम से। मगर जब *रॉबिंसन क्रूसो* तीसरी व चौथी कक्षा के बच्चों के पाठ्यक्रम की सामग्री बन जाता है, तो क्या हम उल्टी गंगा नहीं बहा रहे हैं? क्यों ना बच्चे को वास्तविकता से उसके पूरे व्यापक दायरे के साथ अवगत कराएँ, उसकी तीव्र ताक़तों और जीवन के लिए और अधिक सुस्पष्ट और स्थाई मूल्यों के साथ। ऐसे में *रॉबिंसन क्रूसो* को समान प्रकार की सम्भावनाओं और गतिविधियों के एक विशेष मामले के कल्पनात्मक रूपांकन की तरह उपयोग किया जा सकता है। आमतौर पर आदिम जीवन के अध्ययन का या विशेष तौर पर नार्थ अमरीकन इंडियन्स (North American Indians) के अध्ययन का, मूल्य चाहे कुछ भी हो, इसे हम सीधे-सीधे ना पढ़ाकर 'हायावाथा' (Hiawatha) कविता के ज़रिए परोक्ष रूप से क्यों पढ़ा रहे हैं? कविता का प्रयोग परिस्थितियों और संघर्षों की शृंखला के अन्तिम आदर्श स्वरूप को समझने के लिए करना जबकि बच्चा उससे पहले ही प्रत्यक्ष रूप में अवगत हो चुका है। या तो इंडियनों का जीवन सामाजिक जीवन के सन्दर्भ में कुछ स्थाई सवाल व कारक प्रस्तुत करता है या फिर इसकी शिक्षा योजना में कोई जगह नहीं है। अगर इसका कोई मूल्य है, तो वह अपने स्वयं के बूते पर उजागर होना चाहिए, बजाय साहित्यिक प्रस्तुति की नफ़ासत और सौन्दर्य में खोने के।

इसी तरह से, मेरे ख़्याल से प्रकृति पर निर्भर चरित्रों और सामाजिक सम्बन्धों की समझ, ऐतिहासिक शिक्षा में कालानुक्रम के महत्त्व को पहचानने में हमें सक्षम बनाती है। आजकल सभ्यता के विकास का अनुगमन उन्हीं क्रमिक चरणों में करने पर ज़ोर डाला जा रहा है, जिसमें वह वास्तव में हुआ था – यूफ़्रेटिज (Euphrates) और नाइल (Nile) नदी की घाटियों से शुरू करते हुए, यूनान और रोम से गुज़रते हुए आदि। तर्क यह दिया जाता है कि वर्तमान अतीत पर निर्भर है और अतीत का हर चरण उससे पहले बीते अतीत के चरण पर निर्भर है।

हम यहाँ इतिहास की तार्किक और मनोवैज्ञानिक व्याख्या के टकराव से परिचित होते हैं। अगर (प्राथमिक शिक्षा में इतिहास का) ध्येय यह देख-सराह पाना है कि सामाजिक जीवन क्या है और कैसे बीतता है, फिर तो बच्चे को तुलनात्मक रूप से पास से रूबरू होना चाहिए, दूर के भूतकाल से नहीं। बेबीलॉनियाई और मिस्र की ज़िन्दगी के साथ दिक़्क़त समय की दूरी की उतनी नहीं है जितनी यह कि उसका वर्तमान समय के सामाजिक हितों और उद्देश्यों से दूर-दूर तक नाता नहीं

है। यह पर्याप्त रूप से सरलीकरण या सामान्यीकरण नहीं करता है; या कम से कम, सही तरीक़े से ऐसा नहीं करता है। यह उन मुद्दों को भूलकर सरलीकरण और सामान्यीकरण करता है जो अभी महत्त्वपूर्ण हैं, बजाय उन कारकों को एक निचले स्तर पर प्रस्तुत करने के। इसकी मुख्य विशेषताएँ एक विशेषज्ञ द्वारा भी देख पाना और समझ पाना कठिन है। इस बात में कोई शक नहीं कि यह उन कारकों को प्रस्तुत करता है, बाद की ज़िन्दगी में जिनके योगदान रहे और जिन्होंने समय के पहिए में आने वाले घटनाओं के क्रम को संशोधित किया। लेकिन बच्चा अभी उस स्तर पर पहुँचा नहीं है जहाँ वह अमूर्त कारणों और विशेष योगदानों की सराहना कर सके। उसे जो चाहिए, वह है विशिष्ट सम्बन्धों, स्थितियों और गतिविधियों की एक तस्वीर। इस सम्बन्ध में, प्रागैतिहासिक युग का ऐसा बहुत कुछ है जो बेबीलॉन और मिस्र के जटिल और कृत्रिम जीवन की तुलना में उसके ज़्यादा क़रीब है। जब कोई बच्चा संस्थानों का मूल्य समझने के लायक़ हो जाता है, तो वह यह देखने के क़ाबिल भी हो जाता है कि कौन-सा ऐतिहासिक देश किस विशेष संस्थागत विचार के पक्ष में रहा है और वर्तमान संस्थानों के समूह को खड़ा करने में उसका क्या योगदान रहा है। लेकिन यह अवधि तभी आती है जब बच्चा अन्य क्षेत्रों में भी कारण पता करने के अमूर्तिकरण में सक्षम होने लगता है; दूसरे शब्दों में कहा जाए तो; यह समय तब होता है जब बच्चा उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के क़रीब होता है।

इस सामान्य योजना में तीन अवधियों या चरणों को मान्यता दी गई है; सबसे पहले आता है सरलीकृत और सामान्यीकृत इतिहास – इतिहास जो केवल नाम मात्र को ही स्थानीय या कालानुक्रमिक अर्थ में इतिहास है, लेकिन जिसका उद्देश्य बच्चे को विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के बारे में सोचने की क़ाबिलियत और उनके प्रति सहानुभूति देना है। इस चरण में आमतौर पर छः साल के बच्चे देश व शहरों के वर्तमान ठेठ व्यवसायों के बारे में जानते हैं; सात साल के बच्चे आविष्कारों के क्रमागत विकास और उनका जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में समझ बनाते हैं; और आठ साल के बच्चे पलायन, अन्वेषण और खोज के महान अभियानों को पढ़ते-समझते हैं जिन्होंने पूरी दुनिया को इन्सानी ज्ञान में शामिल किया है। पहले दो वर्षों का काम किन्हीं विशेष व्यक्तियों या किसी व्यक्ति-विशेष से स्वतंत्र है – यानी किसी ऐतिहासिक डेटा से स्वतंत्र है। इसके साथ ही, नाटकीयता के माध्यम से व्यक्तिगत कारक की शुरुआत की काफ़ी गुंजाइश प्रदान की जाती है। महान अन्वेषकों और खोजियों के ब्यौरे स्थानीय और विशिष्ट की तरफ़ यात्रा करते हैं, उन चीज़ों की तरफ़ जो किन्हीं ख़ास लोगों पर निर्भर हैं, ऐसे विशिष्ट लोग जो किन्हीं ख़ास स्थानों व कालखण्ड में रहते थे। यहाँ हमारी पहचान दूसरे चरण से होती है, जहाँ बच्चों की सीमित व निश्चित (positive, as in positivism) तथ्यों से जूझने की क्षमता के मद्देनज़र कुछ ख़ास प्रकार के लोगों की स्थानीय परिस्थितियाँ और निश्चित

गतिविधियाँ उभरकर आती हैं। जैसे शिकागो, जैसे संयक्त राष्ट्र, ऐसे स्थानीय उदाहरण हैं जिनके साथ बच्चा, इन मामलों की प्रकृति के कारण, सबसे प्रभावी ढंग से निपट सकता है। इसीलिए अगले तीन वर्षों की सामग्री प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से इस स्रोत से प्राप्त होती है। यहाँ, तीसरा साल फिर एक संक्रमण का साल है, जो अमरीकी जीवन और यूरोपियन जीवन के सम्बन्ध के मुद्दे को उठाता है। इस समय तक बच्चा ना केवल सामाजिक जीवन के साथ जूझने के लिए तैयार होना चाहिए या उस सामाजिक जीवन के साथ जूझने के लिए तैयार होना चाहिए जिसे वह भलीभाँति जानता है, बल्कि उन सामाजिक जीवनों से भी जो कुछ निश्चित रूप से विभेदित हैं या जिन्हें किसी विशिष्ट प्रकार का सामाजिक जीवन कहा जाए; जिनमें से हरेक का विशेष महत्त्व है और पूरे विश्व इतिहास में जिनके विशेष योगदान भी रहे हैं। तदनुसार, अगले चरण में कालानुक्रम का पालन किया जाता है, प्राचीन भूमध्यसागरीय काल से शुरुआत कर यूरोपियन इतिहास से होते हए अमरीकी इतिहास के विशिष्ट व विभेदक कारकों तक।

यह कार्यक्रम समस्या से रूबरू होने वाले एकमात्र कार्यक्रम के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है, बल्कि एक योगदान के रूप में किया गया है। परिणाम विचार का नहीं, बल्कि साल दर साल विषयों के साथ किए गए प्रयोगों और स्थानान्तरणों का है, बच्चों को ऐसी सामग्री देने की समस्या का है जो उन पर महत्त्वपूर्ण पकड़ बना सके और साथ ही उसे एक-एक करके, क़दम दर क़दम, सामाजिक जीवन के ज्ञान एवं सिद्धान्तों के अधिक गहरे और सटीक ज्ञान की ओर ले जा सके और बाद के और भी गहरे ऐतिहासिक अध्ययन के लिए उसे तैयार करे।